NCERT Solutions For Class 10 Hindi (Sparsh)

CH 7 - आत्मत्राण

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है ?

उत्तर : कवि भगवान से प्रार्थना कर रहा है जो कि बेहद दयालु, कृपालु और सर्व व्याप्त हैं। कवि भगवान से यह प्रार्थना कर रहा है कि भगवान उसे इतनी शक्ति व साहस दें कि वह अपने जीवन में आने वाले कष्टों, मुश्किलों व दुखों का डटकर सामना कर सके। साथ ही ऐसे समय में भी उसकी आस्था में कभी कोई कमी न आए।

2. 'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं'- कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर : इस पंक्ति के द्वारा कवि यह कहना चाहते हैं कि है ईश्वर, मैं यह नहीं कहता कि मुझ पर कोई संकट नहीं आए, मेरे जीवन में कोई दुख परेशानी, कोई दुख ना आए बल्कि मैं यह चाहता हूँ कि मुझे इतनी शक्ति देना कि मैं इन विपदाओं, परेशानियों व दुखों का डटकर सामना कर सकूं और उन पर विजय हासिल कर सकूँ।

3. कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है ?

उत्तर : कवि सहायक के न मिलने पर यह प्रार्थना करता है कि उसकी हिम्मत, साहस, हौंसलें, आस्था और विश्वास में कभी भी कोई भी कमी न आए, यदि संसार में उसे कोई दुःख, परेशानी, कष्ट, मुश्किल भी मिले तो भी उसमें उसे सहने की शक्ति हमेशा हो।

4. अंत में कवि क्या अनुनय करता है ?

उत्तर : अंत में कवि यह अनुनय करता है कि चाहे जीवन में कितनी भी परेशानियां आए परंतु भगवान पर से उसका भरोसा और विश्वास कभी कम ना हो अपितु मुमकिन हो तो भगवान उन परेशानियों को सहने की उसे शक्ति दें।

5. 'आत्मत्राण ' शीर्षक की सार्थकता कविता के सन्दर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : आत्मत्राण का मतलब है आत्मा का त्राण अर्थात आत्मा का निवारण, मन के भय से हमेशा के लिए मुक्ति। कवि चाहता है कि जीवन में आने वाले दुखों को वह निडर होकर सहें, उसे कभी भी कोई परेशानी या दुख ना मिले ऐसी वह प्रार्थना नहीं करता बल्कि स्वयं के लिए उस स्थिति में भी साहस व धैर्य रखने की मांग करता है इसलिए यह शीर्षक मेरे अनुसार पूर्णतः सार्थक है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अतिरिक्त आप और क्या – क्या प्रयास करते हैं ? लिखिए।

उत्तर : अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना के अतिरिक्त हम निरतंर प्रयास, कड़ी मेहनत, अथक संघर्ष व लक्ष्यपूर्ण कार्य कर सकते हैं। इन सभी प्रयासों से हम अपनी इच्छाओं की पूर्ति अवश्य ही कर पाएँगे।

7. क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है। यदि हाँ, तो कैसे ?

उत्तर : जी हाँ, कवि की यह प्रार्थना मुझे अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है क्योंकि अन्य प्रार्थना गीतों में दास भाव, आत्मसमर्पण के भाव, सभी दुखों को दूर करके खुशहाली वाले जीवन की प्रार्थना, मानवता का विकास, सभी कार्य पूर्ण हो ऐसी प्राथनाएँ होती है परंतु इस कविता में परेशानियों से मुक्ति की प्रार्थना ना करके उन्हें सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई है। साथ ही परेशानियों में भी आस्था ज्यों की त्यों बनी रहे ऐसी कामना भी की गई है।

निम्नलिखित अंशों के भाव स्पष्ट कीजिए:

(1) नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।

उत्तर : इन पंक्तियों में कवि यह कहना चाहते हैं कि सुख के दिनों में भी वह सिर झुकाकर ईश्वर को याद रखें| वह एक पल के लिए भी ईश्वर को कभी भुलाना नहीं चाहते|

(2) हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में न मानूँ क्षय

उत्तर : इन पंक्तियों के द्वारा कवि ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि जीवन में उन्हें लाभ मिले या हानि, वह किसी भी परिस्थिति में अपना संयम व मनोबल ना खोए। वह उस परिस्थिति का डटकर, साहस के साथ सामना करें।

(3) तरने की हो शक्ति अनामय।
'मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

उत्तर : इन पंक्तियों में कवि ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि यदि ईश्वर उन्हें दुख दें तो उसे सहने की शक्ति भी दें। वह यह प्रार्थना बिल्कुल नहीं करते कि ईश्वर उन्हें दुख, परेशानी, कष्ट ना दें बल्कि वह पूर्ण आस्था से ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि जीवन की हर परिस्थिति को सहने की ईश्वर उन्हें शक्ति दें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in